शैतानी त्रिकोण

अधार्मिकता - आज्ञालंधन - हठधर्मी

शोक़ी आफ़न्दी के तुरंत निधन के बाद २७ में से २६ धर्मभुजाओं (Hand of Cause) ने अपनी अधार्मिक, आज्ञालंधन और हठधर्मी के कारण जो ग़लत काम किए, उस की वजह से वह सदा के लिए निन्दित और अभिशस्त हो गए.

शोक़ी आफ़नदी के निधन के तुरंत बाद इस अपवित्र शैतानी त्रिकोण ने अपने विनाशक प्रवेश के द्वारा २७ में से २६ धर्मभुजाओं (Hand of Cause) को अपने चपेट में ले लिया और वह अक्का में एक सम्मेलन में जमा हुए. बहाई जगत को हमेशा के लिए बदनाम और अपमानजनक करदेनेवाला फैसला ले लिया और इस की घोषणा भी कर दी और घोषणा ये थी कि शोक़ी आफ़नदी ने अपने उत्तराधिकारी (Successor) का चयन नहीं किया. और इस तरह उन लोगों ने अपनी दुष्ट और नीच हरकत से बहाई धर्म की प्रशासनात्मक आदेश (Administrative Order) अनुशासन का संकलन जिस को अबदुल बहा ने अपनी वसीयत में चयन किया था रद्द कर दिया.

इस घोषणा में उन्होंने अनावश्यक शीघ्रता प्रकट की. एक झूटी प्राक्कथन के द्वारा धर्मभुजाओं ने आशचर्य चकित किया और इस तरह बहाई धर्म को गम्भीर और निन्दनीय नुकसान का सामना करना पड़ा. और अबदुल बहा की समृध्द पवित्र और ईश्र्वरीय विचारवाली अपरिर्वतनीय वसीयत को भी किनारे कर दिया. जिस के लिए शोक़ी अफ़नदी ने अपनी लेख में बार बार जोर दिया है कि अबदुल बहा की वसीयत को बहाउल्लाह के कथन और उच्चारण समझे जाएं और उसको बहाउल्लाह ही की वसीयत समझी जाए.(W.O.B., P-22) अतः यह वसीयत एक प्रलेख (Document) है उस समय तक जब तक बहाउल्लाह का धर्म बाक़ी रहेगा. स्पष्ट रूप से बहाउल्लाह धर्म में ईश्र्वरीय धर्म रक्षकों (Gaurdian of Cause of God) के न टूटनेवाले क्रम की व्याख्या करती है, और बताती है कि सारे धर्म रक्षक अपने पुर्वक के द्वारा उन के जीवन में ही चयन किए जाएँगे. और उन की हैसियत धर्म रक्षकता में "केंद्र" की हैसियत होगी जो पवित्र बहाई लेख की मात्र व्याख्या करने वाले होगें और यह विश्व न्याय मंदिर (Universal House of Justice) को सजीव बनाए रखने के लिए धार्मिक मार्ग दर्शक होंगे. और बहाई संघटन संस्थापित करने के लिए यह मात्र और अपरिवर्तनीय, आवश्यक और अनिवार्य होंगे.

उन लोगों के धर्म रक्षकता के समाप्त कर देनेवाले कार्य को कभी माफ नहीं किया जा सकेगा और उन का यह कार्य खुद उन ही के बनाए हुए संगठन को शोक़ी आफ़नदी के चुनिंदा धर्मभुजाओं में से आन्तिम धर्मभुजाओं के निधन के बाद समाप्त कर देगा.

इन दोषी धर्मभुजाओं ने अबदुल बहा की वसीयत के महत्वपूर्ण आज्ञाओं और अदेशों को रद्द कर दिया जिसकी पूण्य और पवित्रता कभी प्ररिवर्तित न होनेवाली हैसियत को शोक़ी आफ़नदी ने बहाउल्लाह की पवित्र किताब "किताब अक़दस" के समान बताया है. और इस सम्बन्ध में उन्होंने ने कहा है "यह दोनों प्रलेख (वसीयत अबदुल बहा और किताब अक़दस) न

सिर्फ एक दुसरे के परिशिष्ठ हैं बल्कि यह एक दूसरे की पुष्ठिकर्ता हैं और यह एक सम्पूर्ण इकाई के कभी भी जुदा न होनेवाले तत्व हैं.(W.O.B., P-4)

इस प्रकार इन लोगों ने अपनी अधार्मिकता के कारण धर्मसंरक्षता को रद्द कर दिया और उसकी जगह यह गिरे हुए धर्मभुजाओं ने अपनी चयन की हुई प्रणाली को प्रचलित किया. जिस में अबदुल बहा के चयन किए हुए जुड़वा प्रणाली (धर्म रक्षकता और विश्व न्याय मंदिर) को परिवर्तित कर अपने ही दरमियान से नौ मिमबरों का चयन कर के बगैर धर्म रक्षक के संगठन स्थापित कर लिया जिन्हें बहाई अभिरक्षक (Custodian) बना दिया. और इन्हें दोहरी ज़िम्मेदारी अर्थात कानून बनानेवाले और कानून निष्पादन करनेवाले (Executive & Legislative Body व्यवस्थापक और कार्यपालक संस्था) बना दिए और बड़ी ढिटाई और बेशर्मी के साथ धर्म रक्षक की जगह खुद ही सारे काम निवारा करने लगे यहाँ तक कि "रिज़वान १९६३" तक यह सब चलता रहा और फिर एक गैर कानूनी और बोगस संस्था **बगैर किसी धर्म रक्षक** के उधम मचाते हुए, ग़लत तरीके से विश्व न्याय मंदिर संस्थापित किया और यह सोच बैठे कि इन लोगों ने **अबदुल बहा की पवित्र वसीयत के अनुसार इस संस्था स्थापना की**.

दुसरी तरफ जो बात स्पष्ट होनी चाहिए वह यह है कि इन धर्मभुजाओं ने यह सोच लिया कि शोक़ी आफ़नदी अबदुल बहा के पवित्र निर्देश अर्थात अपने बाद अपना उत्तराधिकारी चयन करने में नाकाम हो गये और इन धर्मभुजाओं ने बड़ी वफादारी और इमानदारी के साथ अबदुल बहा के इस पवित्र निर्देश पर कार्य करते हुए विश्व न्याय मंदिर की स्थापना की.

परंतु धर्म रक्षकता (Guardianship) को समाप्त करने में उन की अवैध शीघ्रता में वह लोग शोक़ी आफ़नदी के एहसान और कृपा को मालूम करने में नाकाम हो गए जिस को शैक़ी आफ़नदी ने विशेष अनदाज में अबदुल बहा की वसीयत के अनुसार क्रियापन किया अर्थात "अपने जिवन में" ही अपना उत्तराधिकारी बना दिया. शोक़ी आफ़नदी ने जोनते हुए संदेहात्मक कोरणों से वसीयत नामा लिख कर उत्तराधिकारी का चयन नहीं किया बल्कि उस उत्तराधिकारिता को उन्होंने जनवरी १९५१ में अर्थात अपने निधन से छः साल पहले ही इस अंदाज़ में घोषना की कि उन के चयन किए हुए उत्तराधिकारी जो अभी तक लोगों के सामने स्पष्ट नहीं हुए थे सब लोगों पर स्पष्ट हो जाएं और किसी भी तरह से किसी बहाई से यह बात छुपी न रह जाए और लोगों के हाथों में एक कुंजी देते हुए एक युग निर्माण (Epoch Making) निर्णय ९ जनवरी १९५१ को घोषणा की, और अधिकारिक तौर पर "पहली विश्व बहाई सभा" (First IBC), से पहले भूणीय विश्व सस्था (The First Embryonic International Institution) की अतः सस्थापित करने से उन्हों ने बहाउल्लाह के धर्म की उन्नति जो कि पिछले ३० साल से हो रही थी (अबदुल बहा के निधन के बाद) के लिए प्रशासनात्मक आदेश (Administrative Order) का एक स्पष्ट मील का पत्थर (Significant Mile Stone) जड़ दिया.

और यह धर्मभुजाओं बड़ी अच्छी तरह जानते थे कि शोक़ी आफ़नदी ने मेसेन रेमी को इस भूणीय विश्व संस्था (The First Embryonic International Institution) का प्रेसिडेंट बनाया है परंतु अपनी धर्म रक्षकता के दौर (Ministry) में इसे निषक्रिय (inactive) रखा. और इस के सक्रिय करने (activation) और इसकी भविष्य के लिए सिलसिलेवार क्रम (Stages) की ओर शोक़ी आफ़नदी ने इशारा कर दिया कि इस खिलते हुए फूल की उन्नति की आंतिम स्वरूप "विश्व न्याय मंदिर" और इस का पवित्र मार्ग दर्शक (Sacred Head) सिर्फ और केवल बहाई धर्म का धर्म रक्षकता होगा.

अतिरिक्त यह कि उन धर्मभुजाओं के लिए शोक़ी आफ़नदी के उत्तराधिकारी को पहचानना बिलकुल स्पष्ट था. अतः अगर विश्व न्याय मंदिर के सिलसिले में स्पष्ट दिशा निर्देश जिसे शोक़ी आफ़नदी ने अपने २३ नवम्बर १९५१ के संदेश में संकलन किया था, उसे इमानदारी और वफादारी के साथ निभाया होता तो बहाई धर्म का यह केंद्रीय संस्था (Central Body) मेसन रेमी की अध्यक्षता में पहली बार सक्रिय हो जाती और उस संस्था से निकलने वाली विस्तृत सक्रिय शखाएं अर्थात राष्ट्रीय सभाएं (National Assemblies) अपने दस वर्षीय विश्व योजना (Ten Year Global Crusade) पर तुरंत रिजवान १९५३ में शुरू कर दिया होता.

परंतु यह बात स्पष्ट है कि धर्मभुजाओं अपनी बातों को दोहराते रहे और शाक़ी आफ़नदी के ९ जनवरी १९५१ की घोषणा और २३ नवेम्बर १९५१ के संदेश की भी परवाह न की या फिर उन्होंने इस की अवहेलना की और विश्व बहाई संस्था (IBC) को उस के मूल भूमिका से रोक दिया.

यदि धर्मभुजाओं शोकी आफ़नदी की दिशा निर्देश और आदेशों को इमानदारी और वफादारी के साथ स्वीकार कर लेते तो अवश्य उन्हें शोक़ी आफ़नदी के इस गुप्त, अनपेक्षित और समपूर्ण रूप से जायज को उपयोगी और प्रभावी करने का कारण समझ में आ जाता. उन्हों ने महसूस ोकया कि शोक़ी आफ़नदी ने अपने निधन के बाद उजड़ते हुए विस्तृत द्दश्य को जायज तौर पर गुप्त रखा (शोक़ी को बहुत पहले अपने निधन की पूर्व सूचना मिल चुकी थी लेकिन गुप्त रखा.) कि मेसेन रेमी उन के बाद जीवित रहेंगे और ईश्र्वरीय आदेश की रक्षा करेंगे.

और उन लोगों ने यह भी महसूस किया कि उन (शोक़ी आफ़नदी) का उत्तराधिकारी उन से आयु में २३ वर्ष बड़ा है और उसके लिए यह भी प्रारब्ध(destined) है कि वह उन के बाद जीवित रहेगा.

जोल ब्रे मारंजला
(Guardian of the Bahai Faith)

(Hindi Translation by PNBC of India)